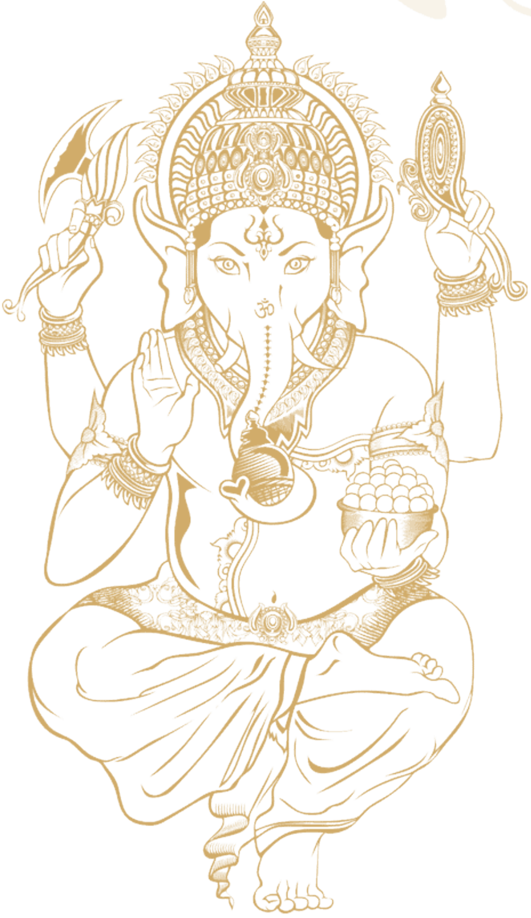

Harshita ji yajman

06 Jul 2005

06:40 PM

Gunawati

Model: Baby-Horoscope **Order No: 121612301**

तिथि 06/07/2005 **समय** 18:40:00 **वार** बुधवार **स्थान** Gunawati **चित्रपक्षीय अयनांश** : 23:55:58
अक्षांश 27:01:07 उत्तर **रेखांश** 74:42:52 पूर्व **मध्य रेखांश** 82:30:00 पूर्व **स्थानिक संस्कार** -00:31:09 घंटे

पंचांग

साम्पातिक काल	13:07:19 घं
वेलान्तर	00:04:44 घं
सूर्योदय	05:42:34 घं
सूर्यास्त	19:28:58 घं
चैत्रादि संवत	2062
शक संवत	1927
मास	आषाढ़
पक्ष	कृष्ण
तिथि	1
नक्षत्र	पुनर्वसु
योग	व्याघात
करण	किंस्तुघ्न

अवकहड़ा चक्र

गण	देव
योनि	मार्जार
नाड़ी	आद्य
वर्ण	शूद्र
वश्य	मानव
वर्ग	मार्जार
युँजा	मध्य
हंसक	वायु
जन्म नामाक्षर	के-केसरी
पाया(रा.-न.)	ताम्र-रजत
होरा	सूर्य
चौघड़िया	लाभ

विंशोत्तरी

गुरु 14वर्ष 7मा 16दि

शनि

21/02/2020
21/02/2039

शनि	24/02/2023
बुध	03/11/2025
केतु	13/12/2026
शुक्र	12/02/2030
सूर्य	25/01/2031
चन्द्र	25/08/2032
मंगल	04/10/2033
राहु	10/08/2036
गुरु	21/02/2039

योगिनी

पिंगला 1वर्ष 9मा 28दि

सिद्धा

05/05/2025
04/05/2032

सिद्धा	14/09/2026
संकटा	04/04/2028
मंगला	14/06/2028
पिंगला	03/11/2028
धान्या	04/06/2029
भ्रामरी	15/03/2030
भद्रिका	05/03/2031
उल्का	04/05/2032

ग्रह	व	अ	अंश	राशि	नक्षत्र	पद	स्वामी	अं.	स्थिति	षट्बल	चर	स्थिर	ग्रह तारा
लग्न			09:49:13	धनु	मूल	3	केतु	शनि	---	0:00			
सूर्य			20:37:33	मिथु	पुनर्वसु	1	गुरु	गुरु	सम राशि	1.86	भ्रातृ	पितृ	जन्म
चंद्र			21:08:34	मिथु	पुनर्वसु	1	गुरु	गुरु	मित्र राशि	1.42	अमात्य	मातृ	जन्म
मंगल			22:36:41	मीन	रेवती	2	बुध	चंद्र	मित्र राशि	1.22	आत्मा	भ्रातृ	विपत
बुध			16:42:54	कर्क	आश्लेषा	1	बुध	बुध	शत्रु राशि	1.07	मातृ	ज्ञाति	विपत
गुरु			16:24:36	कन्या	हस्त	2	चंद्र	शनि	शत्रु राशि	1.01	पुत्र	धन	वध
शुक्र			16:08:34	कर्क	पुष्य	4	शनि	गुरु	शत्रु राशि	0.87	ज्ञाति	कलत्र	सम्पत
शनि		अ	04:47:29	कर्क	पुष्य	1	शनि	शनि	शत्रु राशि	1.17	कलत्र	आयु	सम्पत
राहु	व		24:42:36	मीन	रेवती	3	बुध	राहु	सम राशि		---	ज्ञान	विपत
केतु	व		24:42:36	कन्या	चित्रा	1	मंगल	राहु	शत्रु राशि		---	मोक्ष	मित्र

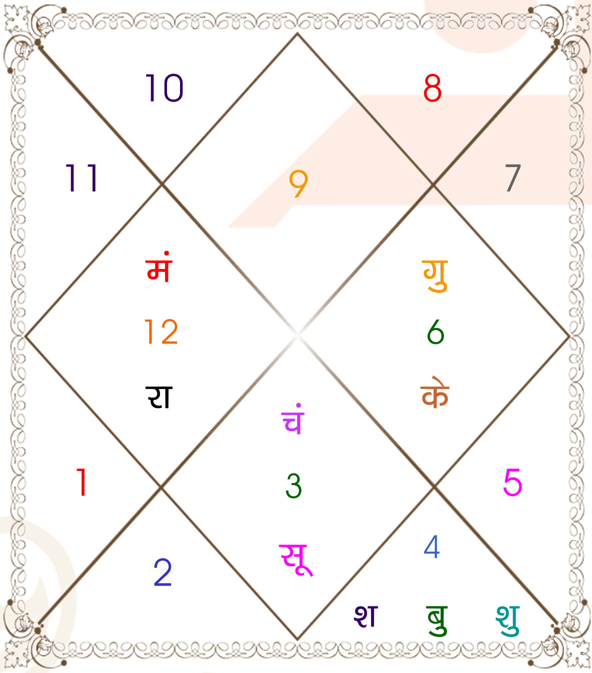
लग्न-चलित
10
8
11
9
7
मं
12
रा
गु
6
के
चं
3
सू
1
5
2
4
श
बु
शु

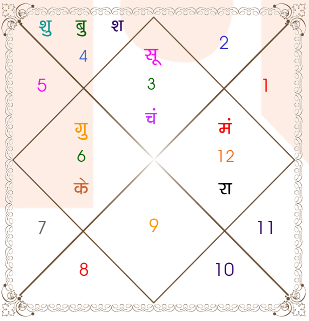
चन्द्र कुंडली
शु
बु
श
4
सू
3
चं
2
5
1
गु
6
के
मं
12
रा
7
9
11
8
10

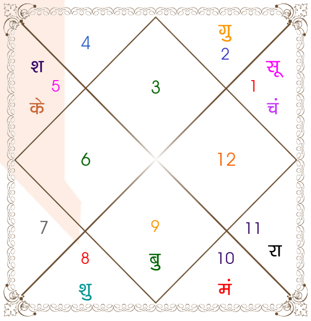
नवमांश कुंडली
4
गु
2
श
5
के
3
सू
1
चं
6
12
7
9
11
रा
8
शु
बु
10
मं

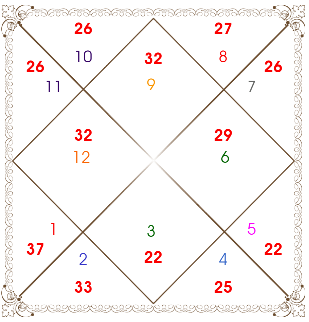
सर्वाष्टकवर्ग
26
10
27
8
26
11
32
9
26
7
32
12
29
6
1
37
3
5
22
2
33
22
4
25

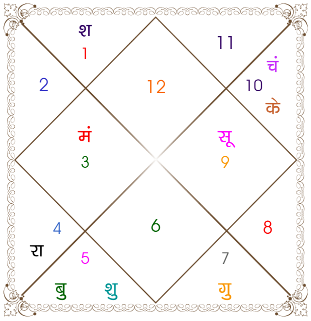
दशमांश कुंडली
श
1
11
चं
2
12
10
के
मं
3
सू
9
4
रा
6
8
5
7
बु
शु
गु

नक्षत्रफल

आप पुनर्वसु नक्षत्र के प्रथम चरण में उत्पन्न हुई हैं। अतः आपकी जन्मराशि मिथुन तथा राशि स्वामी बुध होगा। नक्षत्र के अनुसार आपकी योनि मार्जार, वर्ण शूद्र, नाड़ी आद्य, गण देव तथा वर्ग मार्जार होगा। नक्षत्र के चरणानुसार आपके जन्म नाम का प्रथमाक्षर "के" होगा।

आप अत्यन्त ही शान्त स्वभाव की होंगी तथा संकट या क्लेश के समय में भी धैर्य धारण करके रखेंगी। किसी भी प्रकार की घबराहट या उतावलेपन का प्रदर्शन नहीं करेंगी। आप अपने जीवन को सुखपूर्वक बिताएंगी तथा समस्त सांसारिक तथा भौतिक सुखों की आपको प्राप्ति होगी। शारीरिक दृष्टि से आप सुन्दर तथा गौरवर्ण की महिला होंगी तथा सौभाग्य से हमेशा युक्त रहेंगी। समाज में आप खूब लोकप्रिय रहेंगी तथा समाज के सभी वर्गो की भलाई के कार्यों में हमेशा तन मन धन से तत्पर रहेंगी। आप जीवन में पुत्र तथा मित्रों से भी हमेशा युक्त रहेंगी।

शान्तः सुखी च सम्भोगी सुभगो जनबल्लभः।
पुत्रमित्रादिभिर्युक्तो जायते च पुनर्वसौ।।
मानसागरी

अर्थात् पुनर्वसु नक्षत्र में उत्पन्न जातक, शान्त सुखी, भोगी, सुन्दर, लोकप्रिय तथा पुत्र एवं मित्रों से युक्त होता है।

आप श्रेष्ठ आचरण से युक्त तथा सुशील स्वभाव वाली होंगी। यदा कदा आपकी बुद्धि में दुष्टता के भाव भी उत्पन्न होंगे जिससे आपकी प्रवृति भी दुष्कर्मो की ओर अग्रसर होगी। आप हमेशा अपने को अतृप्त सा अनुभव करेंगी जिससे तृष्णाओं की पूर्ति के लिए आप व्याकुल रहेंगी। परन्तु सन्तोषी प्रवृति होने के कारण आप अल्प प्राप्ति में ही परम सन्तुष्टि का अनुभव करेंगी।

दान्तः सुखी सुशीलो दुर्मेधा रोगभाक् पिपासुश्च।
अल्पेन च सन्तुष्टः पुनर्वसौ जायते मनुजः।।
बृहज्जातकम्

अर्थात् पुनर्वसु में उत्पन्न जातक क्लेश की स्थिति में भी सहनशील, सुखी, सुशील, दुष्टबुद्धिवाला, तृषाकुल तथा थोड़े से ही सन्तुष्ट होने वाला होता है।

आप ज्ञानी होंगी तथा आपकी आत्मा भी ज्ञान के प्रकाश से प्रकाशित रहेगी एवं कठिन से कठिन विषयों का भी आपको ज्ञान रहेगा। आप अपने धनैश्वर्य तथा शारीरिक बल से समाज में कीर्ति को प्राप्त करेंगी। लेखन कार्य में आपकी प्रारम्भ से ही रूचि रहेंगी तथा कविता लेखन में आपको सफलता प्राप्त हो सकती हैं।

गूढात्मा च पुनर्वसौ धनबलविख्यातः कविः कामुकः।
जातकपारिजातः

अर्थात पुनर्वसु में उत्पन्न जातक गूढात्मा, धन तथा बल से विख्यात, कवि तथा कामुक प्रकृति का होता है।

मित्रों की संख्या आपकी अधिक मात्रा में रहेगी तथा शास्त्रों के अध्ययन में भी आपकी अभिरूचि रहेगी तथा शास्त्रज्ञान प्राप्त करने के लिए आप इनका निरन्तर अभ्यास करेंगी। आप रत्न तथा स्वर्णादि से निर्मित आभूषणों से भी युक्त रहेंगी। इसके साथ ही आपकी प्रवृति भी दानशील रहेगी तथा आप बहुत से द्रव्यों एवं भूमि आदि से सम्पन्न रहेंगी।

प्रभूतमित्रः कृतशास्त्रयत्नः सद्रत्नचामीकरभूषणाढ्यः।
दाता धरित्री वसुभि समेतः पुनर्वसु यस्य भवेत्प्रसूतौ।
जातकाभरणम

अर्थात् पुनर्वसु में उत्पन्न जातक अधिक मित्रों वाला, शास्त्रों का अभ्यास करने वाला, रत्नस्वर्णादि आभूषणों से परिपूर्ण, दान, द्रव्य एवं भूमि से युक्त होता है।

आप ताम्रपाद में उत्पन्न हुई हैं। अतः आप आजीवन धन धान्य से सुसम्पन्न रहेंगी। आप पति के रूप में श्रेष्ठ एवं गुणवान पुरूष को प्राप्त करेंगी। साथ ही कई प्रकार के बहुमूल्य रत्नों एवं धातुओं तथा सोना, चांदी आदि से भी आप सुशोभित रहेंगी। आपका शारीरिक सौन्दर्य सुन्दर एवं आकर्षक रहेगा तथा स्वास्थ्य भी अच्छा होगा। आप एक विदुषी महिला होंगी तथा विविध प्रकार से चल अचल जायदाद या सम्पति की स्वामिनी बनेंगी। आप विविध प्रकार के भौतिक सुखसंसाधनों से युक्त रहेंगी एवं जीवन में प्रसन्नतापूर्वक इनका उपभोग कर सकेंगी। आप की समस्त पुत्र तथा कन्या सन्ततियां सुन्दर एवं गुणवान होंगी एवं जीवन में आप संतति सुख अर्जित करने में भी सफल रहेंगी। इस प्रकार आपका परिवारिक जीवन सुखपूर्वक व्यतीत होगा। आप एक सुशील स्वभाव की महिला होंगी तथा अन्य जनों से आपके हमेशा मधुर व्यवहार रहेगा।

आप मिथुन राशि में उत्पन्न हुई हैं। अतः आपकी आँखें श्याम वर्ण की होंगी तथा सिर के बाल भी घुंघराले होंगे। आपके शरीर के समस्त अंग पुष्ट एवं स्वस्थ होंगे तथा नासिका ऊंची होगी। आप नाना प्रकार के शास्त्रों का अध्ययन करेंगी तथा परिश्रमपूर्वक उनका ज्ञान प्राप्त करेंगी। सन्देशों का आदान प्रदान या दूतिका कार्य में आप प्रवीणता प्राप्त करेंगी। आपकी बुद्धि कुशाग्र होगी तथा इसी कुशाग्रता के फलस्वरूप आप अन्य व्यक्तियों की हृदय की बातों को जानने में सफलता प्राप्त करेंगी। सामाजिक जनों से आपका व्यवहार मृदु एवं विनयशील रहेगा जिस से अन्य लोग आपकी प्रशंसा करेंगे। आपकी वाणी भी अत्यन्त श्रेष्ठ एवं मधुर होगी जिसे सुनकर श्रोता हर्षित होंगे। हंसने तथा हंसाने के कार्य में भी आप अत्यन्त चतुर होंगी। संगीत तथा नृत्य के प्रति आपका विशेष आकर्षण रहेगा तथा इनका विशद ज्ञान भी आप प्राप्त करेंगी।

स्त्रीलोलः सुरतोपचारकुशलताम्रेक्षणः शास्त्राविद्।
दूतः कुत्रिचद् मूर्धजः पटुमति हास्योङ्गित द्यूतवित्।।
चार्वाङ्गाः प्रियवाक् प्रभक्षण रूचिर्गीतप्रियो नृत्यवित्।
क्लीबैर्याति रतिं समुन्नतश्चन्द्रे तृतीयर्क्षगे।।
बृहज्जातकम्

आपके हाथ में मत्स्याकार का चिन्ह हो सकता हैं। आपकी नसें शरीर के भी बाहर से दृष्टिगोचर होंगी तथा शरीर की लम्बाई भी पर्याप्त होगी आपका सौन्दर्य लावण्यता से परिपूर्ण तथा दर्शनीय होगा। काव्य लेखन के प्रति आपकी अभिरूचि होगी तथा काव्य सृजन में भी आप सफलता प्राप्त करेंगी। आप आजीवन समस्त भौतिक तथा सांसारिक सुखों का आनन्द पूर्वक उपभोग करेंगी। परन्तु आपका अधिकांश समय विषय वासनाओं के सुख में लिप्त रहकर व्यतीत होगा। सौभाग्य से आप युक्त रहेंगी। आप पुरूष वर्ग को वश में करने में भी पूर्ण सफलता प्राप्त करेंगी।

उन्नासश्यामचक्षु सुरतविधिकला काव्यकृद्भोग भोगी।
हस्ते मत्स्याधिपाङ्को विषय सुखरतो बुद्धिदक्षः सिरालः।।
कान्तः सौभाग्य हास्य प्रियवचनयुतः स्त्रीजितौ व्यायताङ्गो।
याति क्लीबैश्च रतिकर्म संख्यशशिनि मिथुनगे मातृयुग्मप्रपुष्टः।।
सारावली

आपकी आयु दीर्घायु होगी तथा आजीवन हँसने हँसाने को प्रिय कार्य समझेंगी। यात्रा या भ्रमण करना आपको अच्छा लगेगा तथा घर के अन्दर रहकर भी शान्ति एवं सन्तुष्टि की अनुभूति करेंगी।

दीर्घायुः सुरतोपचारकुशलो हास्यप्रियो युग्मके।।
जातकपरिजातः

आपके सामाजिक संबंध अत्यन्त विस्तृत रहेंगे तथा समाज के सभी वर्गों में आप जानी जायेंगी तथा उनके मध्य लोकप्रिय भी रहेंगी। पुरूष वर्ग के प्रति आपका अधिक आकर्षण रहेगा तथा पुरूष समाज की प्रिय एवं आदरणीय सदस्या होंगी। आप अपनी योग्यता तथा सज्जनता से सम्मान तथा गौरव को अर्जित करेंगी।

प्रियकरः करमत्स्ययुतोनरः सुरतसौख्यभरो युवतीप्रियः।
मिथुन राशि गतौहिम गौ भवेत्सुजनतजनताकृत गौरवः।।
जातकाभरणम्

आप अपनी भाषा तथा लेखन में श्लिष्ट युत स्पष्ट वाक्यों का प्रयोग करेंगी जिससे सामान्यजन भी समझने में सफल होंगे। आप अपने परिजनों अर्थात् बन्धु बान्धव व संबंधियों तथा अन्य सामाजिक जनों की भलाई के लिए हमेशा कार्य करने में व्यस्त रहेगी। आप पित्त कफ मिश्रित प्रकृति से युक्त तथा अपने आचरण से श्रेष्ठ रहेंगी।

मृदुरूपचित्तगात्रः श्लिष्टविस्पष्टवाक्यः।
परजनहितकर्ता पंडितौ हास्य युक्तः।।
प्रकृति शुभचरित्रं श्लेष्मचित्त स्वभावो।
भवति मिथुन जातो गीतवाद्यानुरक्तः।।
जातक दीपिका

आपकी आँखें हमेशा चंचल रहेंगी। नृत्य तथा संगीत से आपका विशेष लगाव रहेगा तथा अपने सद्व्यवहार तथा सत्कर्म एवं धनैश्वर्य से यश की प्राप्ति करेंगी। आप एक दृढ़निश्चयी महिला होंगी तथा जिसका संकल्प एक बार मन में ले लेंगी उसे परिश्रमपूर्वक पूर्ण करके ही छोड़ेंगी। साथ ही आप न्यायवादी भी होंगी तथा भाषण देने की कला में भी आप प्रवीण होंगी।

मृदुवाक्यो लोलदृष्टिर्दयालु मैथुनप्रियः।
गान्धर्ववित् कासरोगी कीर्तिभोगी धनी गुणी।।
गौरोदीर्घः पटुर्वक्ता मेधावी च दृढव्रतः।
समर्थो न्यायवादी च जायते मिथुने जनः।।
मानसागरी

आप देवगण में पैदा हुई हैं अतः आप श्रेष्ठ वाणी से युक्त होकर मधुर बोलने वाली होंगी जिससे अन्य जन आपसे प्रभावित रहेंगे। आपकी बुद्धि भी अत्यन्त सरल होगी। आपकी एक विशेषता यह रहेगी कि आप अपने विचारों को सुगमतापूर्वक प्रकट करने में सफल रहेंगी तथा दूसरे के विचारों को भी सादगी से ग्रहण करने की क्षमता से पूर्ण रहेंगी। आप सात्विक भोजन की प्रिय होंगी। गुणों की आप ज्ञाता होंगी तथा श्रेष्ठ विद्वानों द्वारा प्रतिपादित सद्गुणों से सम्पन्न रहेंगी। साथ ही आप धन तथा ऐश्वर्य से हमेशा सम्पन्न रहेंगी।

शरीर से आप सुन्दर तथा स्वस्थ रहेंगी। आपकी प्रकृति नैसर्गिकरूप से दानशील रहेगी तथा जीवन में समयानुसार आप इस प्रकृति का प्रदर्शन करती रहेंगी। इससे आप समाज में प्रतिष्ठा को प्राप्त करेंगी। आप सादगी पसन्द होंगी तथा दिखावे एवं प्रपंचों से हमेशा दूर रहेंगी साथ ही विदुषी के रूप में भी समाज में प्रसिद्ध होंगी।

सुस्वरः सरलोक्तमतिः स्यादल्पभोजन करो हि नरश्च।
जायते सुरगणे डणज्ञः सुज्ञवर्णितगुणो द्रविणाढ्यः।।
जातकाभरणम्

अर्थात देवगण का जातक अच्छी वाणी वाला, सरल बद्धि से युक्त, अल्प मात्रा में भोजन करने वाला, अन्य जनों के गुणों का ज्ञाता, महान विद्वानों द्वारा वर्णित गुणों से युक्त तथा वैभवशाली होता है।

मार्जार योनि में उत्पन्न होने के कारण आप स्वभाव से ही हिम्मत से कार्य करने वाली होंगी तथा आप अपने कार्यों में पूर्ण रूप से निपुण रहेंगी। आप मधुर भोजन प्रिय तथा मधुर पेय की प्रिय होंगी। मीठा खाना तथा पीना दोनों आपको रुचिकर लगेंगे। आप में भय का

सदैव अभाव रहेगा तथा निर्भीकता से जीवनार्जन करेंगी। परन्तु कभी-कभी आपकी दुष्ट बुद्धि हो जायेगी जिससे आपका मन दुष्ट कार्यों की ओर भी प्रेरित होगा।

शूरः स्वकार्येदक्षश्च मिष्ठानपान भक्षकः।
निर्भयो दुस्वभावश्च नरो मार्जार योनिजः।।
मानसागरी

अर्थात मार्जार योनि में उत्पन्न बालक वीर, अपने कार्यो को निपुणता से करने वाला, मिष्ठानपान भक्षण प्रेमी तथा दुष्ट स्वभाव वाला होता है।

आपके जन्म समय में चन्द्रमा सप्तम भाव में स्थित है। अतः माता का स्वास्थ्य अच्छा रहेगा एवं आयु भी लम्बी होगी। आपके प्रति उनके मन में प्यार एवं स्नेह का भाव रहेगा। धन सम्पत्ति से वे सर्वदा युक्त रहेंगी एवं जीवन में आपको अपना सहयोग प्रदान करेंगी। आपकी शादी करने में भी उनका विशेष सहयोग रहेगा तथा आपको व्यापारादि कार्यों में भी पूर्ण आर्थिक या अन्य रूप से सहयोग तथा प्रोत्साहन देंगी।

आप भी उनके प्रति पूर्ण श्रद्धालु रहेंगी एवं हमेशा उनका हार्दिक सम्मान करेंगी। उनकी बातों से आप प्रायः सहमत रहेंगी तथा उसका पालन करने के लिए भी तत्पर रहेंगी। आपके मध्य कभी कभी सैद्धान्तिक मतभेदों की भी उत्पत्ति होगी जिसके कारण कभी कभी अप्रिय स्थिति भी उत्पन्न हो सकती है। परन्तु कुल मिलाकर आपसी संबंध अच्छे रहेंगे तथा एक दूसरें का सहयोग करने के लिए सर्वदा तत्पर रहेंगे।

आपके जन्म समय में सूर्य की स्थिति सप्तम भाव में है अतः पिता की आप प्रिय रहेंगी। उनका स्वास्थ्य अच्छा रहेगा एवं आयु भी लम्बी होगी। आपके शुभ प्रभाव से धनलाभ प्राप्त करने में वे सफल होंगे तथा जीवन में सर्वप्रकार से आपकी सहायता एवं सहयोग करने के लिए तत्पर रहेंगे। आपके विवाह कराने में उनका पूर्ण सहयोग रहेगा। साथ ही आप उनकी विश्वास पात्र भी होंगी।

आपकी भी उनके प्रति पूर्ण सम्मान की भावना रहेगी तथा उनकी आज्ञा पालन में भी नित्य रूचिशील रहेंगी। आपके आपसी संबंध मधुर होंगे परन्तु यदा कदा कुछ सैद्धान्तिक मतभेद भी होंगे जिससे सम्बन्धों में क्षणिक तनाव एवं कटुता उत्पन्न होगी परन्तु कुछ समयोपरान्त सब कुछ स्वतः ही ठीक हो जाएगा। इसके साथ ही आप जीवन में उनकी सहायता करने के लिए भी तत्पर रहेंगी एवं अपनी ओर से उन्हें किसी भी प्रकार से कष्ट नहीं होने देंगी।

आपकी जन्म कुण्डली में मंगल की स्थिति चौथे भाव में है अतः आपके भाई बहिनों का स्वास्थ्य मध्यम रहेगा एवं यदा कदा वे शारीरिक रूप से अस्वस्थ रहेंगे। आपके प्रति उनके मन में स्नेह एवं सम्मान का भाव रहेगा तथा सुख दुःख में आपको हमेशा उनसे वांछित आर्थिक तथा अन्य प्रकार का सहयोग प्राप्त होता रहेगा। साथ ही व्यापार एवं आजीविका संबंधी कार्यों में भी वे आपकी पूर्ण सहायता करेंगे।

आप भी उनको मन से सम्मान एवं स्नेह प्रदान करेंगी तथा सुख दुःख में सर्वदा

उनके साथ रहेंगी एवं यथाशक्ति उनको वांछित आर्थिक तथा अन्य प्रकार की सहायता भी प्रदान करती रहेंगी। आपके आपसी संबंध मधुर रहेंगे परन्तु यदा कदा सैद्धान्तिक मतभेदों के कारण संबंधों में कटुता या तनाव आएगा परन्तु कुछ समय के बाद स्थिति सामान्य हो जाएगी। साथ ही आप एक दूसरे से सहमत भी रहेंगे एवं विश्वास पूर्वक जीवन में परस्पर सहयोग का भाव रखेंगे।

आपके लिए आषाढ़ मास, द्वितीया, सप्तमी तथा द्वादशी तिथियाँ (2,7,12) दोनों शुक्ल तथा कृष्ण पक्ष की, स्वाती नक्षत्र, परिध योग, चतुष्पाद करण, सोमवार, तृतीय प्रहर तथा धनुराशिस्थ चन्द्रमा आपके लिए अनिष्टकारी रहेगा। अतः आपको चाहिए कि 15 जून से 14 जुलाई के मध्य 2,7,12 तिथियों में, स्वाती नक्षत्र, परिध योग, चतुष्पाद करण में कोई भी शुभकार्य, व्यापार प्रारम्भ, नवगृह निर्माण या क्रय विक्रय आदि शुभ कार्य सम्पन्न न करें अन्यथा लाभ की अपेक्षा हानि ही होगी। साथ ही सोमवार, तृतीय प्रहर तथा धनुराशि के चन्द्रमा को भी शुभ कार्यों में त्याज्य समझें। इन दिनों तथा समय में शारीरिक सुरक्षा तथा स्वास्थ्य का भी पूर्ण ध्यान रखें।

यदि आपके लिए समय अशुभ चल रहा हो शारीरिक या मानसिक व्याकुलता बढ़ रही हो व्यापार में हानि, नौकरी प्राप्ति या प्रोन्नति में व्यवधान तथा अन्य अशुभ फल घटित हो रहे हों तो ऐसे समय में आपको श्री गणेश जी के नित्य प्रातः एवं सायं दर्शन करने चाहिए तथा बुधवार के उपवास रखने चाहिए। साथ ही पन्ना, हरितवस्त्र, मिश्री, कर्पूर, घृत, गेहूँ इत्यादि पदार्थों का भी दान करना चाहिए तथा बुध के तांत्रीय मंत्र के 17000 जप करवाने चाहिए। इससे अशुभ फलों में कमी होगी तथा मानसिक शान्ति भी प्राप्त होगी।

ॐ ब्रां ब्रीं ब्रों सः बुधाय नमः।
मंत्र- ॐ ऐं स्त्रीं श्रीं बुधाय नमः।